7 सुमित्रानन्दन पन्त

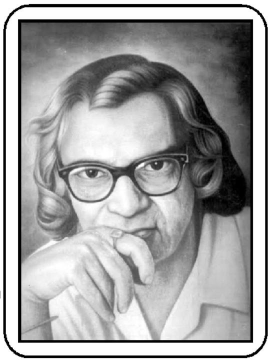

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—सन् 1900 ई०।
- **जन्म-स्थान**—कौसानी (कुमायूँ)।
- **पूर्व-नाम**—गुसाईं दत्त।
- **पिता**—गंगादत्त पन्त।
- **संपादन :** रूपाभ (संपादन)।
- **भाषा :** संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली।
- **शैली :** छायावादी काव्य-शैली।
- **प्रमुख रचनाएँ**—युगवाणी, लोकायतन, चिदम्बरा, स्वर्ण किरण, उत्तरा, अतिमा।
- **मृत्यु**—सन् 1977 ई०।

कविवर पन्त का जन्म हिमालय के सुरम्य प्रदेश कूर्मांचल (कुमायूँ) के कौसानी ग्राम में सन् 1900 ई० में हुआ था। जन्म के कुछ घण्टे बाद ही माँ का निधन हो जाने के कारण दादी ने इनका लालन-पालन किया। सात वर्ष की आयु में चौथी कक्षा में पढ़ते हुए इन्होंने सर्वप्रथम छन्द-रचना की। उच्च कक्षा में पढ़ने के लिए जब अल्मोड़ा आये तब अपना नाम गुसाईं दत्त से बदलकर सुमित्रानन्दन पन्त रखा। जुलाई, 1919 ई० में इलाहाबाद आये और म्योर सेण्ट्रल कॉलेज में प्रवेश लिया। लेकिन 1921 ई० में महात्मा गाँधी के आह्वान पर कॉलेज छोड़ दिया। अपने कोमल स्वभाव के कारण सत्याग्रह में सम्मिलित नहीं हुए और साहित्य-साधना में संलग्न हो गये। सन् 1931 ई० में कालाकाँकर चले गये। वहाँ मार्क्सवाद का अध्ययन किया और फिर प्रयाग आकर प्रगतिशील विचारों की पत्रिका 'रूपाभा' निकाली। सन् 1942 ई० में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन से प्रेरित होकर 'लोकायतन' नामक सांस्कृतिक पीठ की योजना बनायी। उसे क्रियान्वित करने के लिए विश्व प्रसिद्ध नर्तक उदयशंकर से सम्पर्क स्थापित किया और फिर उनके साथ भारत-भ्रमण को निकल पड़े। इसी भ्रमण में श्री अरविन्द से इनका परिचय हुआ और उनके विचारों से विशेष प्रभावित हुए। प्रयाग लौटकर इन्होंने अरविन्द के दर्शन से प्रभावित अनेक काव्य संकलन प्रकाशित किये-यथा—**'स्वर्ण किरण'**, **'स्वर्ण धूलि'**, **'उत्तरा'** आदि। सन् 1950 ई० में ये आकाशवाणी से सम्बद्ध हुए और प्रयाग में रहकर स्वच्छन्द रूप से साहित्य सृजन करते रहे। इन्हें **'कला' और 'बूढ़ा चाँद'** पर साहित्य अकादमी, **'लोकायतन'** पर सोवियत और **'चिदम्बरा'** पर ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुए। सन् 1977 ई० में इनका निधन हो गया।

पन्तजी ने सुन्दरम् के कवि के रूप में अपना साहित्यिक जीवन आरम्भ किया था। इनकी प्रारम्भिक रचनाओं **'वीणा'**, **'ग्रन्थि'**, **'पल्लव'** और **'गुंजन'** में हम इन्हें प्रकृति के विभिन्न रूपों का अभिनन्दन करते हुए देखते हैं। इनकी सौन्दर्य चेतना सर्वप्रथम तो हिमाच्छादित पर्वत-शृंखलाओं की सुषमा देखकर सजग हुई थी। उसके बाद इनका मन बादल, इन्द्र-धनुष, नक्षत्र, सरिता आदि की शोभा के दर्शन से आनन्द-विभोर हो उठा। उषा, सन्ध्या आदि का सौन्दर्य फिर इन्हें भावमग्न कर गया। यौवन

के प्रथम चरण में इन्होंने किसी किशोरी के बाल-जाल में अपने लोचनों को उलझा देने की इच्छा का भी अनुभव किया और उसके बाद तो इस विराट् जगत् में प्रकृति के विभिन्न सुन्दर विधानों में सुमनों और बेलों से भी अधिक मानव सुन्दर प्रतीत होने लगा।

पन्तजी की काव्य-दृष्टि के विकास में इनके काव्य-संकलन '**पल्लव**' की रचना 'परिवर्तन' का विशेष महत्त्व है। पन्तजी अपनी इस रचना में सुन्दरम् के कवि के रूप में नहीं, इस जगत् के जीवन-प्रवाह के कठोर यथार्थ के द्रष्टा के रूप में प्रकट होते हैं। यह यथार्थ-बोध इस जगत् की कटु वास्तविकताओं के प्रति इन्हें विद्रोहशील भी बना गया है। इनके संकलन '**युगान्त**' की रचनाओं में हम इन्हें पुरानी व्यवस्था को विनष्ट करके नयी व्यवस्था लाने के लिए तत्पर देखते हैं। इसी विद्रोहशील भावना को लेकर पन्तजी कार्ल मार्क्स के साम्यवाद के प्रति आकर्षित हुए। इनके '**युगवाणी**' और '**ग्राम्या**' संकलनों की रचनाओं में इसी विचारधारा को अभिव्यक्ति मिली है। यदाकदा इन रचनाओं में गाँधी दर्शन का प्रभाव भी दृष्टिगत होता है।

पन्तजी स्वभावतः आत्मनिष्ठ हैं, इसीलिए मार्क्स के बहिर्मुखी तथा भौतिकवादी दर्शन में इनका मन अधिक समय तक नहीं रमा और श्री अरविन्द के अध्यात्मवादी दर्शन से परिचय होते ही ये उसके प्रति अनुरक्त हो उठे। अरविन्द के जीवन-दर्शन में भारतीय अध्यात्म और पाश्चात्य विज्ञान का अनोखा समन्वय है। पन्तजी की रचनाओं में इस दर्शन के प्रभाव के फलस्वरूप इसी समन्वित जीवन-दृष्टि को वाणी मिली। आज भी इनकी रचनाएँ अरविन्द-दर्शन की इस दिव्य-चेतना से ओत-प्रोत हैं और नयी मानवता की प्रतिष्ठा के लिए सचेष्ट हैं।

पन्तजी की भाषा सदा ही बड़ी चित्रमयी रही है और वह बड़े ही मनोरम बिम्बों की योजना करती है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि सादृश्यमूलक अलंकार इन्हें विशेष प्रिय हैं, लेकिन वे सजावट के रूप में नहीं, इनकी अनुभूति से अन्तरंग होकर कविता के अंग जैसे लगते हैं। इनकी काव्य-रचनाओं को पढ़कर यह निर्णय नहीं हो पाता कि ये कवि अधिक हैं या विचारक या शिल्पी।

पन्तजी का काव्य नारी, प्रकृति, मानवतावाद तथा अन्तःचेतनावाद से प्रभावित है। उसमें अरविन्द-दर्शन की प्रमुख भावना स्पष्ट लक्षित होती है। मानव-जीवन की विविध समस्याओं का समाधान करने के लिए कवि ने गाँधीवाद का सहारा भी लिया था। मार्क्सवाद द्वारा कवि भारतीय समाज में आर्थिक दृष्टि से फैली समानता को दूर करने का वर्णन करता है, क्योंकि यह वाद इसी विश्वास पर टिका है। पन्तजी ने साम्यवाद के समान ही गाँधीवाद का भी स्पष्ट रूप से समर्थन करते हुए लिखा है—

मनुष्यत्व का तत्त्व सिखाता निश्चित हमको गाँधीवाद।
सामूहिक जीवन विकास की साम्य योजना है अविवाद॥

नौका विहार

[चाँदनी रात की प्राकृतिक सुषमा के वातावरण में गंगा में नौका विहार करते हुए जो अलौकिक आनन्द की अनुभूति, सहज सौन्दर्य का बोध, मनोरम कल्पनाओं का अन्तस्थ सूक्ष्म संवेदन कवि को होता है, उसका चित्रात्मक अंकन इस रचना में है। जल में प्रतिबिम्बित चन्द्र, तारा, आकाशादि की छवि का अंकन और गंगा के अपूर्व सौन्दर्य का चित्रण करते हुए कवि जीवन-धारा के उद्‌गम और सतत प्रवाह का वर्णन कर जीवन के चरम सत्य का उद्‌घाटन करता है।]

शान्त, स्निग्ध ज्योत्स्ना उज्ज्वल!
अपलक अनंत नीरव भूतल!
सैकत शय्या पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म विरल,
लेटी हैं श्रान्त, क्लान्त, निश्चल!
तापस बाला गंगा निर्मल, शशिमुख से दीपित मृदु करतल,
लहरे उर पर कोमल कुन्तल!
गोरे अंगों पर सिहर-सिहर, लहराता तार-तरल सुन्दर
चंचल अंचल-सा नीलाम्बर!
साड़ी सी सिकुड़न सी जिस पर, शशि की रेशमी विभा से भर
सिमटी हैं वर्तुल, मृदुल लहर!

चाँदनी रात का प्रथम प्रहर,
हम चले नाव लेकर सत्वर।
सिकता की सस्मित सीपी पर मोती की ज्योत्स्ना रही विचर
लो, पालें चढ़ी, उठा लंगर!
मृदु मंद-मंद, मंथर-मंथर, लघु तरणि, हंसिनी-सी सुन्दर,
तिर रही खोल पालों के पर!
निश्चल जल के शुचि दर्पण पर बिम्बित हो रजत पुलिन निर्भर
दुहरे ऊँचे लगते क्षण भर!
कालाकाँकर का राजभवन सोया जल में निश्चिन्त, प्रमन
पलकों पर वैभव-स्वप्न सघन!

नौका से उठती जल-हिलोर,
हिल पड़ते नभ के ओर-छोर!
विस्फारित नयनों से निश्चल कुछ खोज रहे चल तारक दल
ज्योतित कर जल का अंतस्तल;
जिनके लघु दीपों को चंचल, अंचल की ओट किए अविरल
फिरतीं लहरें लुक-छिप पल-पल!
सामने शुक्र की छवि झलमल, पैरती परी-सी जल में कल,
रुपहरे कचों में हो ओझल!
लहरों के घूँघट से झुक-झुक दशमी का शशि निज तिर्यक्-मुख
दिखलाता मुग्धा-सा रुक-रुक।

जब पहुँची चपला बीच धार,
छिप गया चाँदनी का कगार!

दो बाहों से दूरस्थ तीर धारा का कृश कोमल शरीर
आलिंगन करने को अधीर!
अति दूर, क्षितिज पर विटप-माल लगती भ्रू-रेखा-सी अराल,
अपलक-नभ नील-नयन विशाल;
माँ के उर पर शिशु-सा समीप, सोया धारा में एक द्वीप,
उर्मिल प्रवाह को कर प्रतीप,
वह कौन विहग? क्या विकल कोक, उड़ता हरने निज विरह शोक?
छाया की कोकी को विलोक!

पतवार घुमा, अब प्रतनु भार,
नौका घूमी विपरीत धार।
डाँड़ों के चल करतल पसार, भर-भर मुक्ताफल फेन-स्फार
बिखराती जल में तार-हार!
चाँदी के साँपों-सी रलमल नाचती रश्मियाँ जल में चल
रेखाओं-सी खिच तरल-सरल!
लहरों की लतिकाओं में खिल, सौ-सौ शशि, सौ-सौ उडु झिलमिल
फैले फूले जल में फेनिल;
अब उथला सरिता का प्रवाह, लग्गी से ले-ले सहज थाह।
हम बढ़े घाट को सहोत्साह!

ज्यों-ज्यों लगती नाव पार,
उर में आलोकित शत विचार।
इस धारा-सी जग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उद्‌गम,
शाश्वत है गति, शाश्वत संगम!
शाश्वत नभ का नीला विकास, शाश्वत शशि का यह रजत हास,
शाश्वत लघु लहरों का विलास!
हे जग-जीवन के कर्णधार! चिर जन्म-मरण के आरपार,
शाश्वत जीवन-नौका-विहार!
मैं भूल गया अस्तित्व ज्ञान, जीवन का यह शाश्वत प्रमाण
करता मुझको अमरत्व दान। **('गुंजन' से)**

परिवर्तन

[पन्तजी ने अपनी 'परिवर्तन' शीर्षक रचना में जीवन की अस्थिरता के प्रति अपनी सहानुभूति को वाणी दी है। छायावादी कवि के रूप में ये प्रारम्भ में अतीत को भावना और कल्पना से अनुरंजित बड़े ही मनोरम रूप में प्रस्तुत करते हुए देखते हैं। उसके बाद कवि की दृष्टि आज के जीवन की विपन्नता, दीनता और दरिद्रता की ओर गयी है। अतीत और वर्तमान में जो यह वैषम्य दृष्टिगत होता है उसे काल के प्रवाह में परिवर्तन के क्रम से घटित होते हुए दिखाकर इन्होंने परिवर्तनशीलता के प्रति अपने भावोद्‌गार प्रकट किये हैं। वस्तुतः ये यह कहना चाहते हैं कि इस जगत् में सब कुछ नाशवान और क्षणभंगुर है। सब कुछ बराबर बदलता रहता है।]

(1)

कहाँ आज वह पूर्ण पुरातन, वह सुवर्ण का काल?
भूतियों का दिगंत छवि जाल,
ज्योति चुंबित जगती का भाल?

राशि-राशि विकसित वसुधा का वह यौवन-विस्तार?
स्वर्ग की सुषमा जब साभार
धरा पर करती थी अभिसार!
प्रसूनों के शाश्वत शृंगार,
(स्वर्ण भृंगों के गंध विहार)
गूँज उठते थे बारंबार
सृष्टि के प्रथमोद्‌गार!
नग्न सुन्दरता थी सुकुमार
ऋद्धि औ' सिद्धि अपार!
अये, विश्व का स्वर्ण स्वप्न, संसृति का प्रथम प्रभात,
कहाँ वह सत्य, वेद विख्यात?
दुरित, दुख, दैन्य न थे जब ज्ञात,
अपरिचित जरा-मरण भ्रू-पात।

(2)

हाय! सब मिथ्या बात!
आज तो सौरभ का मधुमास
शिशिर में भरता सूनी साँस!
वही मधुऋतु की गुंजित डाल
झुकी थी जो यौवन के भार,
अकिंचनता में निज तत्काल
सिहर उठती,....जीवन है भार!
आज पावस नद के उद्‌गार
काल के बनते चिह्न कराल,
प्रात का सोने का संसार,
जला देती संध्या सी ज्वाल!

अखिल यौवन के रंग उभार
हड्डियों के हिलते कंकाल,
कचों के चिकने, काले व्याल,
केंचुली, काँस, सिवार,
गूँजते हैं सबके दिन चार,
सभी फिर हाहाकार!

(3)

आज बचपन का कोमल गात
जरा का पीला पात!
चार दिन सुखद चाँदनी रात
और फिर अंधकार, अज्ञात!

शिशिर-सा झर नयनों का नीर
झुलस देता गालों के फूल!

प्रणय का चुम्बन छोड़ अधीर
अधर जाते अधरों को भूल!

मृदुल होठों का हिमजल हास
उड़ा जाता निःश्वास समीर;
सरल भौंहों का शरदाकाश
घेर लेते घन, घिर गंभीर!

शून्य साँसों का विधुर वियोग
छुड़ाता अधर मधुर संयोग;
मिलन के पल केवल दो चार,
विरह के कल्प अपार!

अरे, वे अपलक चार नयन
आठ आँसू रोते निरुपाय,
उठे रोओं के आलिंगन
कसक उठते काँटों-से हाय!

(4)

किसी को सोने के सुख साज
मिल गया यदि ऋण भी कुछ आज,
चुका लेता दुख कल ही ब्याज
काल को नहीं किसी की लाज!

विपुल मणि रत्नों का छविजाल,
इंद्रधनु की सी छटा विशाल—
विभव की विद्युत ज्वाल
चमक छिप जाती है तत्काल;

मोतियों जड़ी ओस की डार
हिला जाता चुपचाप बयार!

(5)

खोलता इधर जन्म लोचन
मूँदती उधर मृत्यु क्षण-क्षण;
अभी उत्सव औ' हास हुलास,
अभी अवसाद, अश्रु उच्छ्वास!
अचिरता देख जगत् की आप
शून्य भरता समीर निःश्वास,
डालता पातों पर चुपचाप
ओस के आँसू नीलाकाश,
सिसक उठता समुद्र का मन,
सिहर उठते उडुगन!

(6)

अहे निष्ठुर परिवर्तन!
तुम्हारा ही तांडव नर्तन
विश्व का करुण विवर्तन!
तुम्हारा ही नयनोन्मीलन,
निखिल उत्थान, पतन!
अरे वासुकि सहस्रफन!
लक्ष अलक्षित चरण तुम्हारे चिह्न निरंतर
छोड़ रहे हैं जग के विक्षत वक्षःस्थल पर!
शत शत फेनोच्छ्वसित, स्फीत फूत्कार भयंकर
घुमा रहे हैं घनाकार जगती का अंबर
मृत्यु तुम्हारा गरल दंत, कंचुक कल्पांतर
अखिल विश्व ही विवर,
वक्र कुण्डल
दिङ्मंडल!

('पल्लव' से)

बापू के प्रति

[महात्मा गाँधी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का लेखा-जोखा देते हुए भारतीय जीवन में उनके व्यापक प्रभाव और भारतीय इतिहास को ही नहीं, अपितु विश्व इतिहास में उनकी देन को रेखांकित करते हुए कवि ने अपनी भावांजलि समर्पित की है। सत्य, अहिंसा, असहयोग, प्रेम के माध्यम से अन्याय, हिंसा और साम्राज्यवाद की मदान्ध शक्तियों को पराजित कर गाँधीजी ने जिस अभूतपूर्व आत्मबल का परिचय दिया, उसका महत्त्व भी प्रतिपादित किया गया है। यह रचना विश्व मानवता के इतिहास में गाँधीजी के योगदान का पूर्णतः परिचय देती है।]

तुम मांसहीन, तुम रक्तहीन
हे अस्थिशेष! तुम अस्थिहीन,
तुम शुद्ध बुद्ध आत्मा केवल,
हे चिर पुराण! हे चिर नवीन!
तुम पूर्ण इकाई जीवन की,
जिसमें असार भव-शून्य लीन,
आधार अमर, होगी जिस पर
भावी की संस्कृति समासीन।

तुम मांस, तुम्हीं हो रक्त अस्थि-
निर्मित जिनसे नवयुग का तन,
तुम धन्य! तुम्हारा निःस्व त्याग
है विश्व भोग का वर साधन;
इस भस्म काम तन की रज से
जग पूर्ण-काम नव जगजीवन,
बीनेगा सत्य-अहिंसा के
ताने-बानों से मानवपन!

सुख भोग खोजने आते सब,
आये तुम करने सत्य-खोज,
जग की मिट्टी के पुतले जन,
तुम आत्मा के, मन के मनोज!
जड़ता, हिंसा, स्पर्धा में भर
चेतना, अहिंसा, नम्र ओज,
पशुता का पंकज बना दिया
तुमने मानवता का सरोज!

पशु-बल की कारा से जग को
दिखलाई आत्मा की विमुक्ति,
विद्वेष घृणा से लड़ने को
सिखलाई दुर्जय प्रेम-युक्ति,
वर श्रम-प्रसूति से की कृतार्थ
तुमने विचार परिणीत उक्ति
विश्वानुरक्त हे अनासक्त,
सर्वस्व-त्याग को बना मुक्ति!

उर के चरखे में कात सूक्ष्म
युग-युग का विषय-जनित विषाद,
गुंजित कर दिया गगन जग का
भर तुमने आत्मा का निनाद।
रंग-रंग खद्दर के सूत्रों में,
नव जीवन आशा, स्पृहाह्लाद,
मानवी कला के सूत्रधार!
हर लिया यन्त्र कौशल प्रवाद!

साम्राज्यवाद था कंस, बन्दिनी
मानवता, पशु-बलाऽक्रान्त,
शृंखला-दासता, प्रहरी बहु
निर्मम शासन-पद शक्ति-भ्रान्त,
कारागृह में दे दिव्य जन्म
मानव आत्मा को मुक्त, कान्त,
जन-शोषण की बढ़ती यमुना
तुमने की नत, पद-प्रणत शान्त!

कारा थी संस्कृति विगत, भित्ति
बहु धर्म-जाति-गति रूप-नाम,
बन्दी जग-जीवन, भू-विभक्त
विज्ञान-मूढ़, जन प्रकृति-काम;
आये तुम मुक्त पुरुष, कहने—
मिथ्या जड़ बन्धन, सत्य राम,
नानृतं जयति सत्यं मा भै,
जय ज्ञान-ज्योति, तुमको प्रणाम!

('युगान्त' से)

अभ्यास प्रश्न

पद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. पद्यांशों पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(नौका विहार)

(क) ज्यों-ज्यों लगती नाव पार,
उर में आलोकित शत विचार।
इस धारा-सी जग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उद्‌गम,
शाश्वत है गति, शाश्वत संगम!
शाश्वत नभ का नीला विकास, शाश्वत शशि का यह रजत हास,
शाश्वत लघु लहरों का विलास!
हे जग-जीवन के कर्णधार! चिर जन्म-मरण के आरपार,
शाश्वत जीवन-नौका-विहार!
मैं भूल गया अस्तित्व ज्ञान, जीवन का यह शाश्वत प्रमाण
करता मुझको अमरत्व दान। **[2019 CS]**

अथवा हे जग जीवन के कर्णधार ... अमरत्व दान। **[2020 ZI]**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) 'जग का क्रम' कैसा है?
(iii) इस पद्यांश के अनुसार क्या-क्या तथ्य शाश्वत है?
(iv) 'रजत हास' और 'कर्णधार' का क्या अर्थ है?
(v) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(vi) किस अदृश्य सत्ता की ओर पन्त जी का संकेत है?

(ख) जब पहुँची चपला बीच धार,
छिप गया चाँदनी का कगार!
दो बाहों से दूरस्थ तीर धारा का कृश कोमल शरीर
आलिंगन करने को अधीर!
अति दूर, क्षितिज पर विटप-माल लगती भ्रू-रेखा-सी अराल,
अपलक-नभ नील-नयन विशाल;
माँ के उर पर शिशु-सा समीप, सोया धारा में एक द्वीप,
उर्मिला प्रवाह को कर प्रतीप,
वह कौन विहग? क्या विकल कोक, उड़ता हरने निज विरह शोक?
छाया की कोकी को विलोक।

प्रश्न– (i) प्रस्तुत पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) नौका विहार के समय कवि को दूर से दिखने वाले तट कैसे प्रतीत होते हैं?

(iv) कवि को वृक्षों को देखकर कैसा प्रतीत हुआ?
(v) धारा के बीच स्थित द्वीप कैसा दिखाई पड़ता है?

(ग) शान्त, स्निग्ध ज्योत्स्ना उज्ज्वल!
अपलक अनन्त नीरव भूतल!
सैकत शय्या पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म विरल,
लेटी है श्रान्त, क्लान्त, निश्चल!
तापस-बाला गंगा निर्मल, शशि मुख से दीपित मृदु करतल,
लहरे उर पर कोमल कुन्तल!
गोरे अंगों पर सिहर-सिहर, लहराता तार-तरल सुन्दर
चंचल अंचल-सा नीलाम्बर!
साड़ी सी सिकुड़न-सी जिस पर, शशि की रेशमी विभा से भर
सिमटी हैं वर्तुल, मृदुल लहर!

अथवा सैकत शय्या पर .... अंचल सा नीलाम्बर। **[2020 ZF]**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत पद्य-पंक्तियों में किसका चित्रण किया गया है?
(iv) गंगा बालू के मध्य बहती हुई कैसी प्रतीत हो रही हैं?
(v) प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने अपने आस-पास के कैसे वातावरण का वर्णन किया है?
(vi) रेत की शय्या पर क्षीणकाय स्त्री सी कौन लेटी हुई है?
(vii) गंगा का स्वरूप किस प्रकार दिखलाई पड़ रहा है?
(viii) किसके शरीर पर तारों के प्रतिबिम्ब लहरा रहे हैं?
(ix) श्रांत, क्लांत और निश्चल का आशय स्पष्ट कीजिए।

(घ) चाँदनी रात का प्रथम प्रहर,
हम चले नाव लेकर सत्वर।
सिकता की सस्मित सीपी पर मोती की ज्योत्स्ना रही विचर
लो, पालें चढ़ी, उठा लंगर!
मृदु मंद-मंद, मंथर-मंथर, लघु तरणि, हंसिनी-सी सुन्दर,
तिर रही खोल पालों के पर!
निश्चल जल के शुचि दर्पण पर बिम्बित हो रजत पुलिन निर्भर
दुहरे ऊँचे लगते क्षण भर!
कालाकाँकर का राजभवन सोया जल में निश्चिन्त, प्रमन
पलकों पर वैभव-स्वप्न सघन! **[2019 CX]**

प्रश्न– (i) कवि नौका विहार हेतु किस समय प्रस्थान करते हैं?
(ii) रात्रि में गंगा नदी की रेती की शोभा कैसी लग रही थी?
(iii) 'लघु तरणि हंसिनी सी सुन्दर' में कौन-सा अलंकार है?
(iv) रेखांकित पद्यांश की व्याख्या कीजिए।
(v) पाठ का शीर्षक तथा कवि का नाम बताइए।

(परिवर्तन)

(ङ) आज बचपन का कोमल गात
जरा का पीला पात!
चार दिन सुखद चाँदनी रात
और फिर अंधकार, अज्ञात!
शिशिर-सा झर नयनों का नीर
झुलस देता गालों के फूल!
प्रणय का चुम्बन छोड़ अधीर
अधर जाते अधरों को भूल!

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) बचपन का कोमल और सुन्दर शरीर वृद्धावस्था आने पर कैसा हो जाता है?
(iii) इस पद्यांश में कवि ने किसका वर्णन किया है?
(iv) 'शिशिर-सा झर नयनों का नीर, झुलस देता गालों के फूल' इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

(च) मृदुल होठों का हिमजल हास
उड़ा जाता निःश्वास समीर;
सरल भौंहों का शरदाकाश
घेर लेते घन, घिर गंभीर!
शून्य साँसों का विधुर वियोग
छुड़ाता अधर मधुर संयोग;
मिलन के पल केवल दो चार,
विरह के कल्प अपार!

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) वृद्धावस्था की गहरी साँसें किसे उड़ा देती हैं?
(iii) 'मिलन के पल केवल दो चार' में कौन-सा अलंकार है?
(iv) इस पद्यांश में कौन-सा रस है?
(v) रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

(छ) अहे निष्ठुर परिवर्तन!
तुम्हारा ही तांडव नर्तन
विश्व का करुण विवर्तन!
तुम्हारा ही नयनोन्मीलन,
निखिल उत्थान, पतन!
अहे वासुकि सहस्रफन!
लक्ष अलक्षित चरण तुम्हारे चिन्ह निरन्तर
छोड़ रहे हैं जग के विक्षत वक्षःस्थल पर!
शत शत फेनोच्छ्वसित, स्फीत फूत्कार भयंकर
घुमा रहे हैं घनाकार जगती का अम्बर
मृत्यु तुम्हारा गरल दन्त, कंचुक कल्पान्तर

अखिल विश्व ही विवर,
वक्र कुण्डल
दिङ्मंडल!

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) "शत् शत् फेनोच्छ्वसित, स्फीत भयंकर" में कौन-सा अलंकार है?
(iv) प्रस्तुत पद्यांश में परिवर्तन को किसके समान बताया गया है?
(v) विश्व का करुण अन्त किसके कारण हो जाता है?

(बापू के प्रति)

(ज) सुख भोग खोजने आते सब,
आये तुम करने सत्य-खोज,
जग की मिट्‌टी के पुतले जन,
तुम आत्मा के, मन के मनोज!
जड़ता, हिंसा, स्पर्धा में भर
चेतना, अहिंसा, नम्र ओज,
पशुता का पंकज बना दिया
तुमने मानवता का सरोज!

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।
(ii) अधिकांश मानव संसार में आकर किसकी खोज में लग जाते हैं?
(iii) प्रस्तुत पद्यांश किस काव्य-रचना से उद्‌धृत है?
(iv) इस पद्यांश में कवि ने किस प्रसंग का वर्णन किया है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

(झ) तुम मांसहीन, तुम रक्तहीन
हे अस्थिशेष! तुम अस्थिहीन,
तुम शुद्ध बुद्ध आत्मा केवल,
हे चिर पुराण! हे चिर नवीन!
तुम पूर्ण इकाई जीवन की
जिसमें असार भव-शून्य लीन,
आधार अमर, होगी जिस पर
भावी की संस्कृति समासीन।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?
(iv) कौन हड्डियों के ढाँचा मात्र प्रतीत होते हैं?
(v) गाँधी जी के आदर्शों पर भविष्य में किसे खड़ा होना पड़ेगा?

(ञ) कारा थी संस्कृति विगत, भित्ति
बहु धर्म-जाति-गति रूप-नाम,

बन्दी जग-जीवन, भू-विभक्त
विज्ञान-मूढ़, जन प्रकृति-काम;
आये तुम मुक्त पुरुष, कहने—
मिथ्या जड़ बन्धन, सत्य राम,
नानृतं जयति सत्यं मा भै,
जय ज्ञान-ज्योति, तुमको प्रणाम! **[2019 CY]**

प्रश्न– (i) विगत संस्कृति की कौन-कौन सी दीवारें थीं?
(ii) 'जड़ बंधन मिथ्या है और राम सत्य है' यह उद्घोष करने कौन आया?
(iii) 'नानृतं जयति सत्यं' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
(iv) रेखांकित अंश का भावार्थ लिखिए।
(v) कविता का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अधोलिखित सूक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—
(क) शाश्वत जीवन-नौका विहार।
(ख) काल को नहीं किसी की लाज।
(ग) मिलन के पल केवल दो चार, विरह के कल्प अपार।
(घ) गूँजते हैं सबके दिन चार, सभी फिर हाहाकार।
(ङ) इस धारा-सी जग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उद्गम।
(च) जग की मिट्टी के पुतले जन, तुम आत्मा के मन के मनोज।
(छ) चार दिन सुखद चांदनी रात और फिर अन्धकार अज्ञात।
(ज) ······चिर जन्म मरण के आर-पार शाश्वत जीवन नौका-विहार।
(झ) खोलता इधर जन्म लोचन मूँदती उधर मृत्यु क्षण-क्षण।
(ञ) विभव की विद्युत् ज्वाल चमक छिप जाती है तत्काल।
(ट) शाश्वत इस जीवन का उद्गम।
2. छायावादी कविता के परिप्रेक्ष्य में प्रसाद, निराला और पन्त पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार व्यक्त कीजिए।
3. सुमित्रानन्दन पन्त की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए। **[2017 MA]**
4. सुमित्रानन्दन पन्त का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी मुख्य रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
[2017 MA, MC, 18 AA, 19 CP, 20 ZB, ZC, ZH, ZL, ZN]
5. सुमित्रानन्दन पन्त की शिक्षा-दीक्षा और साहित्यिक योगदान का परिचय दीजिए।
6. "पन्तजी प्रकृति के सुकुमार कवि हैं!" इस कथन की समीक्षा कीजिए।
7. सुमित्रानन्दन का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों पर प्रकाश डालिए।
8. पन्तजी छायावादी कवि के साथ प्रगतिवादी कवि भी थे, सोदाहरण पुष्ट कीजिए।

अथवा सुमित्रानन्दन पन्त के प्रकृति वर्णन की विशेषताएँ लिखिए।

9. पन्तजी की रचनाओं के आधार पर छायावाद की विभिन्न प्रवृत्तियों को स्पष्ट कीजिए।
10. पन्तजी की रचनाओं में प्रगतिवाद की जो प्रवृत्तियाँ प्रकट हुई हैं, उन्हें उदाहरणों के साथ प्रस्तुत कीजिए।
11. पन्तजी की 'नौका विहार' शीर्षक रचना के काव्य-सौन्दर्य का निरूपण कीजिए।

12. पन्तजी की 'परिवर्तन' शीर्षक काव्य-रचना के कलात्मक-सौष्ठव को स्पष्ट करते हुए उसका सन्देश लिखिए।
13. पन्तजी की 'परिवर्तन' शीर्षक कविता के काव्य-सौष्ठव को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
14. पन्तजी ने बापू के महामहिम व्यक्तित्व का अभिनन्दन किस प्रकार किया है। अपने शब्दों में लिखिए।
15. सुमित्रानन्दन पन्त के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
16. सुमित्रानन्दन पंत का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों तथा साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
17. 'नौका विहार' के आधार पर पन्त का प्रकृति-चित्रण रेखांकित कीजिए।
18. 'बापू के प्रति' कविता के आधार पर महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व का विश्लेषण कीजिए।
19. सिद्ध कीजिए कि पन्त कोमल कल्पना के कवि हैं।
20. 'नौका विहार' कविता द्वारा कवि क्या सन्देश देता है? स्पष्ट उत्तर दीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पन्तजी ने अपनी रचना 'नौका विहार' के माध्यम से क्या सन्देश दिया है?
2. 'परिवर्तन' कविता द्वारा कवि क्या सन्देश देना चाहता है?
3. "सुमित्रानन्दन पन्त कोमल कल्पनाओं के कवि हैं।" इस कथन पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।
4. "पन्त पहले प्रकृतिवादी थे, बाद में प्रगतिवादी हुए, अन्त में मानवतावादी हो गये।" इस उक्ति के आधार पर पन्त के काव्य-विकास पर प्रकाश डालिए।

काव्य-सौन्दर्यात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
   (क) सिमटी हैं वर्तुल, मृदुल लहर।
   (ख) कारा थी संस्कृति विगत भित्ति, बहु धर्म जाति-गति रूप नाम।
2. रूपक एवं अनुप्रास अलंकार के एक-एक उदाहरण 'नौका विहार' शीर्षक से लिखिए।